International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-July 2019, Submitted in January 2019, iajesm2014@gmail.com

श्रीगंगानगर में कामकाजी महिलाओं की स्थिति

Usha Sharma, Assistant Professor, Shiva College Of Education, Lalgarh Jattan, Sri Ganganagar

भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति शोध कार्य के लिए एक महत्वपूर्ण खोज का विषय है भारत में कार्यशील महिलाओं में तीव्रता से परिवर्तन हुआ है उनकी विभिन्न क्षेत्रों में जैसे राजनैतिक, समाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक विधि सम्बन्धी स्थिति में परिवर्तन एवं प्रगति लाने के विविध प्रयास किए गए हैं। महिलाओं की स्थिति में प्राचीन काल से आज तक जो परिवर्तन हुए हैं एवं हो रहे हैं उस पर यदि विचार किया जाए तो यह आवश्यक भी हो जाता है कि उनकी हो रही प्रगति पर भी अनुसंधान कार्य किया जाए ताकि उनकी समस्याओं को समझकर भविष्य में सुधार हेतु विविध योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा सके। अध्ययन का क्षेत्र श्रीगंगानगर का नगरीय क्षेत्र है यह राजस्थान का पश्चिम भाग में स्थित नगर है जो शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख स्थान रखता है सेवायोजित महिलाओं के कार्यकारी सम्बम्धों एवं पारिवारिक स्थिति में उत्पन्न तनाव के विषय में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

भारतीय समाज एक पुरूष प्रधान समाज रहा है। यहाँ महिलाओं की स्थिति पुरूषों की तुलना में कमतर आंकी गई है। लडकी के जन्म से लेकर मृत्यु तक उसकी स्थिति दूसरे दर्जे की रही है। लडके और लडकी के जन्म से ही भेदभाव भारतीय समाज में रहा है। दहेज प्रथा इसका प्रमुख उदाहरण है।

भारत की जनसंख्या विविध धर्म, जाति एवं वर्ग के आधार पर सदियों में बंटी हैं। देश की आबादी सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक रूप से ग्रामीण नगरीय तथा औद्योगिक समाजों के साथ वर्गीकृत देखी जा सकती है। ग्रामीण समाज का एक भाग घने जंगलों, पहाड़ियों, घाटियों में निवास करता है जिन्हें उनकी भाषा, राजनितिक–सामाजिक संगठन एवं धार्मिक पहचान के कारण आदिम जाति, आदिवासी, वन्यजाति या जनजाति आदि नामों से जाना जाता है। सुदुर अंचलों में निवास करने के कारण विकास की लहर इन तक पहुँच नही पाई और ये अन्य समाजों की तुलना में पिछड़ते गये।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

स्वतंत्रता के समय से ही महिलाओं की स्थिति पर अध्ययन करने के प्रयास किए गए तथा कार्यवाही 1920 में शुरू हो गई जिसमें महिलाओं की समस्याओं एवं महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई थी। महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए समाज सुधारको द्वारा अनेक प्रयत्न किए गए। ब्रिटिश विद्वानों और अन्य विदेशी विद्वानों ने भी इस संबंध में अपने अनुभवों को बताया है। कमला देवी चट्टोपाध्याय ने भारत में स्त्रियों की स्थिति के बारे में पाश्चात्य दुनिया तथा एशियन सम्मेलन को सूचित किया है। कि भारतीय महिलाएं किस तरह अपनी स्थिति को आनंदपूर्वक व्यतीत करती है, तथा उनकी आशाओं और डर के बारे में बताया है।

श्री माधवनन्द स्वामी ने "ग्रेट वीमन इन इंडिया" तथा **श्री आर. सी. मजूमदार** ने स्त्रियों की स्थिति का प्राचीन काल से आधुनिक समय तक का अध्ययन किया है अमेरिका में विवाहित महिलाओं के नौकरी करने की समस्या ने समाजशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित किया है। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में "नारी शक्ति" पर आयोजित एक सम्मेलन में **"वर्क इन द लाइव्स ऑफ मैरिड वूमन"** विषय पर बोलते हुए फेलडमेन ने कहा कि ये अपेक्षतया एक नवीन घटना का प्रतिनिधित्व करती है।

नाय और हॉफमैन ने मिलकर विवाहित कामकाजी महिलाओं की समस्या पर किए गए अध्ययनों को "द एम्पलाईड मदर इन अमेरिका" नामक पुस्तक के रूप में संकलित किया है।

स्त्रियों की अपने काम के प्रति मनोवृति काफी हद तक बदल गई है।

हमारे अध्ययन का क्षेत्र श्री गंगानगर का नगरीय क्षेत्र है, यह राजस्थान के पश्चिम भाग में स्थित नगर है जो शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख स्थान रखता है। श्री गंगानगर की कुल जनसंख्या 19,69500 है। श्री गंगानगर की अनुसूचित जातियों की कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक स्थिति, सामाजिक भूमिका तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन करने हमारा प्रमुख उद्देश्य है। निम्न वर्ग या अनुसूचित जाति की ऐसी महिलायें जो सरकारी सेवाओं में है, से सम्बंधित अध्ययन अभी प्रकाश में नहीं आए क्या ये महिलाएं समाजिक परिवर्तन में अपना स्थान निरूपित कर पा रही हैं या नहीं एंव इनकी कार्यशीलता के उपरान्त समाज की दृष्टिकोण में क्या अतंर आया है? यही स्पष्ट करना शोध का उदेश्य है।

सारांश – Conclusion

1. अनु. जाति की कार्यशील महिलाओं को परिवार में अधिक सम्मान प्राप्त होता है।
2. अनु. जाति की कामकाजी महिलाये पारिवारिक निर्णयों में अधिक भागीदारी लेती है।
3. पारिवारिक सदस्यों का व्यवहार सहयोगात्मक होता है।
4. इन महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति अन्य महिलाओं की तुलना में उच्च होती है।
5. अनु. जाति की कामकाजी महिलाओं को पडौस से सहयोगात्मक रवैया प्राप्त होता है।
6. इन कामकाजी महिलाओं में एकांकी परिवार की महिलायें संयुक्त परिवार की तुलना में तनावपूर्ण जीवन व्यती करती है।
7. अनु. जाति की कामकाजी महिलाओ में तालाक अधिक पाये जाते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–Bibliography

1. जैन, शोभिता : भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी, रावत पब्लिकेशन्स
2. सेठी राजमोहिनी : ग्लोबलाइजेशन कल्चर फंड वीमेन्स डेवलपमेण्ट, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
3. भारत सरकार समानता की ओर, भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति की रिपोर्ट, समाज कल्याण विभाग, शिक्षा व समाज कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली
4. भारत में महिला सशक्तिकरण नीति एवं नियोजन (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) ओमेगा पब्लिकेशनस, नई दिल्ली